''मिथिला की लोक–कलाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : मधुबनी चित्र–कला के विशेष संदर्भ में।''

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

के

सामाजिक विज्ञान संकाय (इतिहास) में

पी–एच0 डी0 उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

2024

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 के0 कॉलेज, मधुबनी

गवेषिका

पूनम यादव
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

1. शोध का शीर्षक(Title of the Research Project) :

''मिथिला की लोक–कलाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : मधुबनी चित्र–कला के विशेष संदर्भ में।''

2. समस्या का अध्ययन(Research Problem) :

किसी भी क्षेत्र के कलात्मक जीवन की पहचान वहाँ की संस्कृति, बौद्धिक विरासत, लोगों की जीवन शैली आदि में रची–बसी होती है। मिथिला की कलात्मक संपदा प्राचीन तो है ही इसके साथ ही बहुआयामी एवं समृद्ध भी है।

मिथिला से अभिप्राय है वर्तमान झारखंड के उत्तर–पूर्वी क्षेत्र, उत्तरी बिहार के लगभग सभी जिले व उनकी उत्तरी सीमा रेखा से सटे नेपाल का वह तराई क्षेत्र जिसमें आज के धनुषा जिला (विशेषतः जनकपुर शहर) आते हैं।

मिथिला अन्वेषण के प्रो. कृष्ण कुमार झा 'अन्वेषक (भा) वि० भवन संस्कृत महाविद्यालय, मुंबई) के अनुसार वर्तमान झारखंड के दुमका, देवघर, पाकुर, गोड्डा, साहेबगंज तथा उत्तरी बिहार के दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया, पूर्णिया, कटिहार, भागलपुर, मुंगेर, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण के पूर्वी क्षेत्र व बेगुसराय के उत्तरी क्षेत्र पौराणिक मिथिला में सम्मिलित थे।

भौगोलिक दृष्टिकोण से यह क्षेत्र उत्तर में हिमालय के तराई से दक्षिण में गंगा नदी तक तथा पश्चिम में बागमती नदी से पूर्व में महानंदा नदी तक विस्तृत है।

गंगा वहति जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकी धारा ।

पश्चिम वहति गंडकी, उत्तर हिमवत वल विस्तारा।।

कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागवती कृतसारा।।

मधय वहति लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।।

– कवीश्वर चन्दा झा, मिथला दर्शन

ऊपर निदेर्शित क्षेत्र में आज के लगभग 25,000 वर्ग मील क्षेत्र आते है, जो उत्तर से दक्षिण 100 मील व पूर्व से पश्चिम 250 मील तक विस्तृत है। उक्त् क्षेत्र 25.3 उत्तरी अक्षांश से 27.5 अंश उत्तरी अक्षांश तक तथा 80.0 अंश से 88. 80 अंश पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है। (मिथिला दशन वर्ष 8 अंक 3)

'मिथिला' नाम का उल्लेख लोकश्रुतियों में है, जो कई सदियों से चली आ रही हैं। धार्मिक ग्रन्थों में सबसे पहला उल्लेख 'रामायण' में मिलता है।

इसके अतिरिक्त महाभारत, पुराणों (वायुपुराण, विष्णुपुराण, हरिवंशपुराण इत्यादि), बौद्ध ग्रन्थों में भी मिथिला की चर्चा की गई है।

देशेषु मिथिला श्रेष्ठा गंगादि भूषिता भुविः।

द्विजेषु मैथिलः श्रेष्ठः मैथिलेषु च श्रोत्रिय।।

– वायु पुराण प्रमाणित मिथिला

मिथिला क्षेत्र के अन्य नामों में 'तिरहुत', 'तीरभुक्ति' व 'विदेह' इत्यादि नामा का उल्लेख मिलता है। तिरहुत व तीरभुक्ति नाम होने का कारण यह है, कि यह क्षेत्र दो नदियों (बागमती व महानंदा) तीर (किनारा) के बीच स्थित है। जबकि विदेह नाम होने के दो कारणों का अनुमान लगाया जाता है। पहला–राजा जनक की पुत्री वैदेही (सीता) के नाम पर इस राज्य को विदेह कहा जाने लगा (वाल्मीकि रामायण)। जबकि दूसरे के अनुसार आर्यों की विदेह शाखा ने सरस्वती के पूरब में सदानीरा (गंडक) की ओर एक राज्य की स्थापना की थी, जिसका नाम विदेह राज्य रखा गया था (यजुर्वेद संहिता)।

मिथिला की विशेषताओं के कारण (बृहद्विष्णु पुराण, मिथिला खंड) मिथिला को 12 नामों से संबोधित किया गया है।

मिथिला, तैरभुक्तिश्च वैदेही, नैमिकाननम् ।
ज्ञानशीलं कृपापीठं, स्वर्णलांगलपद्यति।।
जानकीजन्मभूमिश्च निरपेक्षा, विकल्मषा।
रामानन्दकटो, विश्वभावनी, नित्यमद् गला ।।
इति द्वादश नामानि मिथिलायाः।।

– मिथिला खंड बृहद्विष्णु पुराण

’मिथिला’ प्राचीन काल से ही सभ्यता व संस्कृतियों का केंद्र–बिंदु रहा है। यहाँ की विभिन्न विशेषताओं में से ’कला’ का स्थान अग्रणी है। मिथिला चित्रकला के ख्याति के अतिरिक्त मैथिली और संस्कृत के विद्वानों ने इसे दुनिया भर में खास पहचान दी है। यह भूमि महाकवि कालीदास, मैथिली कवि विद्यापति’ याज्ञवल्क्य, गौतम, मंडन मिश्र तथा वाचस्पति जैसे विद्वानों व मैत्रैयी, गार्गी, भारती व भामती जैसी विदुषी की जन्मभूमि रही है। मैथिली, हिन्दी तथा उर्दू यहाँ की मुख्य भाषा है। विभिन्न भारतीय पर्व–त्योहार जैसे–होलो, दिवाली, छठ, नवरात्र, ईद, बकरीद इत्यादि यहाँ बड़ी धूम–धाम से मनाए जाते हैं। पर्व–त्योहारों या विशेष उत्सवों (जैसे– शादी, उपनयन, जन्म इत्यादि) पर यहाँ के घरों में भित्ति चित्र बनाने का प्रचलन है। अन्य लोक कलाओं में ’सुजनी’, ’सिक्को– मौनी’ व लकड़ी पर नक्काशो इत्यादि प्रसिद्ध है । ’सामाचकेवा’ एवं ’झिझिया’ यहाँ की लोक नृत्य है। देवी माई व ब्रह्म बाबा के गीत यहाँ के लोकगीत है। यहाँ के खान–पान में ’मखाना’, ’मछली’, ’मिठाई’ व पान का विशेष महत्व है। भेष–भूषा में धोती–कुर्ता के साथ मैथिली पाग (टोपी) का महत्व है।

It 'Mithila' is a country with its own traditions, its own pads and its own pride in everything belonging to itself.

–भाषाविद् जी० ए० ग्रियर्सन

मिथिला की लोककला का संक्षिप्त परिचय :

’लोककला’ शब्द दो शब्द लोक व कला से मिलकर बना है। जहाँ ’लोक’ का आशय लोगों से है वही ’कला’ शब्द का अर्थ इतना व्यापक है, कि विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ केवल एक विशेष पक्ष को छुकर रह जाती है।

कला का अर्थ अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है, यद्यपि इसकी हजारों परिभाषाएँ की गयी हैं । भारतीय परम्परा के अनुसार कला उन सारी क्रियाओं को कहते हैं, जिनमें कौशल अपेक्षित हो। यूरोपीय शास्त्रियों ने भी कला में कौशल को महत्वपूर्ण माना है।

कला एक प्रकार का कृत्रिम निर्माण है जिसमें शारीरिक और मानसिक कौशलों का प्रयोग होता है।

मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में, ''अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही तो कला है –(साकेत पंचम सर्ग)''।

दूसरे शब्दों में– मन के अंतःकरण की सुन्दर प्रस्तुति ही कला है।

'कला' शब्द का प्रयोग संभवतः सबसे पहले भरत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। इसके बाद वात्स्यायन और शुकाचार्य ने क्रमशः अपने ग्रंथ 'कामसूत्र' और 'शुक्रनीति' में इसका वर्णन किया है। अधिकतर ग्रंथों में कलाओं की संख्या 64 मानी गयी है। तथापि 'प्रबंधकोश' में 72 व 'ललित–विस्तर' में 86 कलाओं की सूची दी गई है। सबसे अधिक प्रामाणिक सूची 'कामसूत्र' की है।

वर्तमान समय में कला को मानविकी के अन्तर्गत रखा जाता है, जिसमें इतिहास, साहित्य, दर्शन और भाषा विज्ञान आते हैं।

पश्चिम जगत में कला के दो भेद किये गये हैं– उपयोगी कलाएँ (Practice Arts) तथा ललित कलाएँ (Fine Arts)।

परम्परागत रूप से, स्थापत्य कला (Architecture), मूर्तिकला (Sculpture), चित्रकला (Painting), संगीत (Music), काव्य (Poetry), नृत्य (Dance) व रंगमंच (Theater) को कला कहते हैं, जबकि आधुनिक काल में

इनमें फोटोग्राफी, चलचित्रण, विज्ञापन और कॉमिक्स भी जुड़ गये हैं। पारंपरिक कलाओं में लोक–कला की स्वतंत्र पहचान है ।

भारत की अनेक जातियों व जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारंपरिक कलाओं को लोककला कहते हैं। उदाहरण के लिए मधुबनो चित्र कला (जीवित), जादोपटिया (मृतप्राय), कलमकारी, कांगडा, गोंड, चित्तर, तंजावुर, थंगक, पातचित्र, पिछवई, पिथोरा चित्रकला, फड़, बाटिक, यमुनाघाट तथा वरली आदि भारत की प्रमुख लोक कलाएँ हैं।

लोक कलाओं का जन्म भावनाओं और परम्पराओं पर आधारित है, क्योंकि यह जनसामान्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह वर्तमान शास्त्रीय और व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि भी है। यह कला धर्मानुप्रागित भावों से प्रेषित होती है; जिसमें श्रद्धा से रचना की जाती है। विवाह और शुभ अवसरों में लोक कला का विशिष्ट स्थान है। द्वारों पर अलंकृत घड़ों का रखना, उसमें जल व नारियल रखना, वन्दनवार बांधना आदि को आज क आधुनिक युग में भी इसे आदर–भाव, श्रद्धा और उपासना की दृष्टि से देखा जाता है।

कुछ महत्वपूर्ण लोक–कला :

सुजनी–कला : यह कला मिथिला में मधुबनी जिले के अतिरिक्त मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, दरभंगा इत्यादि जिलों में विस्तृत है। इस कला में कपड़े की कई तहों पर रंगीन धागों से नक्काशी की जाती है। इसके तहत किसी फूल, सुंदर दृश्य या किसी देवी–देवता की कृति को सूई की सहायता से थीन पेपर पर उकेरा जाता है। जिसके बाद इस पेपर को कपड़े के नीचे रख के कपड़े पर कॉपी कर ली जाती है। बारिकी और मेहनत के अद्भूत संगम को सही आकार तब मिलता है, यह बनकर तैयार हो जाती है। सुजनी की कढ़ाई साड़ी

के ऊपर तो की ही जाती है साथ ही शॉल, समीज, कुर्ती व फ्रॉक पर भी होती है। सुजनी कला को आम जीवन में प्रयोग होने वाले सामानों पर ही बनाया जाता है जिसे महिलाएँ बहुत पसंद करती हैं। जैसे कुशन कवर, बेडसीट, झोला, मोबाइल हैंडसेट कवर, टीवी कवर, तकिया कवर और हैंड बैग इत्यादि पर भी बनाया जाता है। इसे बनाने में उपयोग होने वाले सभी सामान जैसे कपड़ा, धागा, केरोसिन तेल इत्यादि स्थानीय बाजार में उपलब्ध होती है। इस कार्य में मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाएँ जुड़ी हुई है।

'सिक्को मौनी' कला : यह कला भी मिथिला की अनोखी पहचान है। इस कला में खर व घास से कलात्मक डिजाईन वाली उपयोगी वस्तु बनाई जाती है। इस कला का मुख्य आधार है खर की एक प्रजाति । खर को सिकी भी कहते हैं। इसे सबसे पहले काटकर सुखाया जाता है फिर इस खर या सिकी से खूबसूरत कलाकृतिया बनाई जाती हैं। सिक्की मौनी कला महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। इस कला को सरकारी मदद अपेक्षित है।

लकड़ी पर नक्काशी–कला : इस कला में भी मिथिला अग्रणी है। इस कला में लकड़ी के सामानों को बनाकर, उसपर नक्काशी व रंगीन चित्र अंकित की जाती है। इसके अन्तर्गत घरेलू उपयोग के बड़े व छोटे दोनों सामनों का चुनाव किया जाता है। बड़े सामानों में कुर्सी, पलंग, टेबल इत्यादि बनते हैं, जबकि छोटे सामानों में स्ट्रे, चम्मच, पेन बॉक्स, मशाला कुटने के बर्तन, छोटे खिलौने के रूप में घोड़े, हाथी, ऊँट इत्यादि बनाए जाते हैं तथा उसपर कलात्मक नक्काशी की जाती है। इसी कला को ध्यान में रखते हुए बिहार

सरकार ने भारत सरकार के सहयोग से मधुबनी जिले के जितवारपुर गाँव को 'पहला क्राफ्ट विलेज' बनाने का निर्णय लिया है।

विशेषता :

यह चित्रकला दीवार, केन्वस एवं हस्त निर्मित कागज पर वर्तमान समय में चित्रकारों द्वारा बनायी जाती है। किन्तु प्राचीन काल में मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों के दीवारों पर बनाई जाती थी । इस चित्र में खास तौर पर 'कुल देवता' का चित्रण होता है। हिन्दू देवी–देवताओं में राधा–कृष्ण, शिव–पार्वती, गौरी–गणेश, सीता–राम, माँ काली, माँ दुर्गा व विष्णु के दस अवतार इत्यादि के साथ–साथ प्राकृतिक देवता सूर्य, चन्द्रमा, तुलसी के पौधे और विवाह के दृश्य देखने को मिलता है। चित्रण से पूर्व हस्त निर्मित कागज को तैयार करने के लिए कागज पर गाय के गोबर का घोल बनाकर तथा इसमें बबूल का गोंद डाला जाता है। सूती कपड़े से गोबर के घोल को कागज पर लगाया जाता है और धूप में सुखाकर कर रख लिया जाता है। इसी प्रकार भित्ति चित्र में भी मिट्टी (चिकनी) व गाय के गोबर के मिश्रण में बबूल की गोंद मिलाकर दीवारों पर लिपाई की जाती है। गाय के गोबर में एक खास तरह का रसायन पदार्थ होने के कारण दीवार पर विशेष चमक आ जाती है। इसे घर की तीन खास जगहों पर ही बनाने की परंपरा है, जो निम्न है–

1. पूजा स्थान
2. कोहबर कक्ष (विवाहितों के कमरे में)
3. शादी या किसी खास उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों पर।

3. सम्बन्धित साहित्य (Review of the work done) :

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिसके अध्ययन द्वारा अनुसन्धानकर्त्ता या अनुसन्धानकर्त्री को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसन्धानकर्त्ता का कार्य अन्धे के तीर के सामन होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में वह तब तक एक पग भी आगे नहीं बढ़ा सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि वह क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये। तक तक वह न तो अपनी समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न ही कर सकता है।

सम्बन्धित साहित्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ० उपेन्द्र ठाकुर की (मगध विश्वविद्यालय बोधगया) द्वारा रचित पुस्तक **'मिथिलाक चित्रकला ओ शिल्पकला'** में मिथिला की शैली के उद्भव और विकास अरिपन, भूमिचित्र, भित्तिचित्र, रंग का प्रयोग, विषय–वस्तु व जातीय शैली इत्यादि का वर्णन है। साथ ही सिक्की–मौनी कला को भी छूने का प्रयास किया गया है। तथापि यह अप्रयाप्त व एकांकी है। इस पुस्तक में सुजनी कला व लकड़ी पर नक्काशी कला की कोई जानकारी नहीं है।

प्रॉ0 विजय कुमार ठाकुर की कृति **'मिथिला मैथिली'** में भी मिथिला सभ्यता व संस्कृति की विस्तृत रुप रेखा दी गई है किंतु लोक कला की चर्चा

न के बराबर है। थोड़ी जानकारी मधुबनी चित्रकला के संदर्भ में दी गई है किंतु समान्य पहलूओं को छू कर निकल गई है।

मिथिला सभ्यता, संस्कृति व लोक कलाएं विषय पर डॉ० उपेन्द्र ठाकुर, प्रो0 विजय कुमार ठाकुर के अतिरिक्त डॉ0 रानी झा, डॉ० रत्नेश्वर मिश्र, डॉ0 इन्द्रकांत झा इत्यादि विद्वानों ने काम किया है किन्तु मुख्यतः लोक कला विषय पर अध्ययन–अध्यापन व उचित विस्तार नहीं दिया गया है।

4. उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता (Aims, objectives and Relivance)

लोक कलाओं के सभी पहलूओं पर अनुसंधान आवश्यक है। मेरे द्वारा इस समस्या (विषय) का अध्ययन व अनुसंधान करने का निम्न उदेश्य है–

1. इतिहास लेखन को समृद्ध करना ।
2. लोककलाओं को संरक्षित करना ।
3. मिथिला क्षेत्र के लोककलाओं व सांस्कृतिक धरोहर को राज्य, देश व विश्व समुदाय के समक्ष स्थान दिलाना।
4. मिथिला क्षेत्र के धरोहर के संरक्षण लिए सरकार को सुझाव देना व शिक्षार्थी व विद्वानों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करवाना।
5. पर्यटन व क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देना व उसके संभावनाओं का अध्ययन कर सुझाव देना।

उपरोक्त कथन के आलोक में इस विषय पर अनुसंधान करने का औचित्य बनता है।

अध्ययन का औचित्य :

राष्ट्रीय पाठचर्या की रूपरेखा (NCF: National Curriculum Framework 2005) दस्तावेज में कहा गया है कि ‘‘कला शिक्षा से तात्पर्य है समुदाय की

सांस्कृतिक विरासत के बारे में जानना... कला पारखी के रूप में प्रवेश पाने के लिए तैयार करना।''

माध्यमिक स्तर पर कला शिक्षा के उद्देश्य के रूप में इसी इस्तावेज (NCF 2005) में यह निर्देशित है, कि प्रत्येक शिक्षार्थी को–

1. लोक कलाओं, क्षेत्रीय कलाओं एवं सांस्कृतिक घटकों की जानकारी के अवसर प्रदान करना, जिससे शिक्षार्थी राष्ट्रीय धरोहर और सांस्कृतिक विविधता की सराहना कर सके ।
2. प्रत्येक शिक्षार्थी को अपने क्षेत्र के कलाकारों के जीवन एवं कार्य से परिचित करना ।
3. समुदाय के सहयोग से अपने क्षेत्र में उपलब्ध सामग्री के जरिये सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना ।

उपरोक्त कथन लोककलाओं एवं क्षेत्रीय कलाओं के महत्व को बताते हैं। 2011 के जनगणना के आंकड़े यह सिद्ध करते हैं, कि बिहार देश का सबसे कम साक्षरता दर (61.8%) वाला राज्य है, उसमें भी मिथिला क्षेत्र की साक्षरता दर और कम है, जिसके कारण यह क्षेत्र आर्थिक व समाजिक पिछड़ेपन का शिकार है जबकि विविध प्रकार के साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं, कि कला एवं संस्कृति में यह क्षेत्र अत्यंत संपन्न है।

स्वतंत्र भारत के 78 वर्ष बाद भी केवल मधुबनी चित्रकला ही देश–विदेश में ख्याति अर्जित कर पायी है, जबकि अन्य लोक–कला जैसे सिक्को– मौनी कला, सुजनी कला, लकड़ी नक्काशी कला इत्यादि कलात्मक धारोहर आज भी अधिकांश मामलों में उपेक्षित है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान(Contribution to the Field of Knowledge) :

मधुबनी चित्रकला की एक विशेषता उसकी रूप–रेखा व रंगों का प्रयोग है। मानव चित्र का एक ही भाग बनाया जाता है और चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है। इन रंगों का घर में ही प्राकृतिक रूप से बनाया जाता है। हल्दी से पीला रंग, पीपल के छाल से लाल रंग, चावल से सफेद रंग व काजल से काला रंग इत्यादि का निर्माण इसी प्रकार किया जाता है। चित्र बनाने के लिए 'माचिस की तिल्ली' व 'बाँस की कलम ' का प्रयोग किया जाता है। रंग की पकड़ बनाने के लिए बबूल के वृक्ष की गोंद को मिलाया जाता है।

पौराणिक युग से वर्तमान तक 'मधुबनी चित्र' को बनाने के पीछे के मायने बदल चुके हैं, लेकिन ये लोक–कला अपने आप में इतना कुछ समेटे हुए कि यह आज भी कला के कद्रदानों, भारतीय इतिहास, क्षेत्रीय इतिहास को परिपूर्ण कर रहे हैं।

मिथिला सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होने के बावजूद अपने लोककलाओं को खोता जा रहा है, क्योंकि आधुनिक युग में अर्थ की प्रधानता है और मशीनीकरण के कारण घर के सजावट व वस्तुओं को कम कीमत पर प्राप्त किया जा सकता है, जबकि परंपरागत कला निर्माण में काफी धन खर्च होता है, जो सामान्य मानव के लिए देय नहीं है और साथ ही जिनके पास धन है, उनके पास समय की कमी है। ऐसी स्थिति में लोककलाओं को आगे के पीढ़ी को हस्तान्तरित करना कठिन हो जाता है और लोककला विलुप्त होने लगती है। जबकि क्षेत्रीय लोककला के कद्रदानों की कोई कमी नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में कला प्रेमियों का दायित्व है कि वह समस्या को समझकर बिन्दुवार उसे दूर करे ।

अतः मिथिला क्षेत्र के लोककला 'सिक्को मौनी', 'सुजनी', 'लकड़ी पर नक्काशी' व 'मधुबनी चित्रकला' इत्यादि के परंपरागत महत्व को देखते हुए आधुनिक काल के जरूरत के मुताबिक नये आयामों को शोध के माध्यम से संरक्षित व सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।

6. अध्ययन का क्षेत्र (Scope of the Study) :

'मधुबनी–चित्रकला' मिथिला क्षेत्र के मुख्यतः मधुबनी, दरभंगा एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। माना जाता है कि य चित्र राजा जनक ने, राम–सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाए थे। पहले केवल ऊँची जाति की महिलाओं (जैसे–ब्राह्मण, कायस्थ इत्यादि) को ही इस कला को बनाने की इजाजत थी, लेकिन वक्त के साथ ये सीमाएँ खत्म हो गईं। आज मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलाए इस कला में दक्ष हैं। समय के साथ–साथ चित्रकारी की इस विद्या में पासवान जाति के लोगों द्वारा राजा शैलेश के जीवन वृत्तान्त का चित्रण भी किया जाने लगा। इस समुदाय के लोग राजा शैलेश को अपने देवता के रूप में पूजते हैं।

7. अध्ययन पद्धति (Methodology) :

इस शोध की संरचना मूलतः सर्वेक्षण, निरीक्षण, विश्लेषण व वर्णनात्मक प्रकार की होगी। इसे पूरा करने के लिए ऐतिहासिकता व वैज्ञानिकता का पूरा ख्याल रखा जाएगा।

उक्त शोध मिथिला क्षेत्र में मुख्यतः मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, जिला (बिहार) व जनकपुरधाम (धनुषा जिला नेपाल) के आस–पास के लोककलाओं का अध्ययन किया जाएगा तथा इनमें भी विशेषतः मधुबनी जिला के लोककलाओं के संदर्भ में किया जायेगा।

8. शोध सामग्री की उपलब्धता (Avaibility of the Source Material) :

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए दो स्रोतों का प्रयोग करते हैं. जो निम्न है–

1. प्राथमिक स्रोत
2. द्वितीयक स्रोत

मेरे द्वारा वर्णित शोध–ग्रन्थ व शोध–पत्र में दोनों ही स्रोतों का प्रयोग कर आँकड़ों का संकलन किया जाएगा ।

प्रथमिक स्रोतों के रूप में परिसीमन क्षेत्र (जैसे–मधुबनी, दरभंगा, जनकपुर इत्यादि) का भ्रमण कर, लोककलाओं का स्वयं अवलोकन व सर्वेक्षण किया जाएगा तथा स्थानीय लोगों से चर्चा–परिचर्चा एवं साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जाएगी। जबकि द्वितीय स्रोतों के अन्तर्गत विभिन्न विश्वविद्यालयों (जैसे– जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, पटना विश्वविद्यालय, पटना, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, मगध विश्ववि‌द्यालय, बोधगया इत्यादि) में रखी ग्रन्थों का अध्ययन कर आकड़े एकत्रित किए जायेंगे तथा प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग के पुस्तकालयों, पटना, दरभंगा व बिहार संग्रहालयों व विभिन्न सरकारी व गैर–सरकारी बेवसाइटों का इस्तेमाल किया जाएगा साथ ही निम्न पुस्तकों का अध्ययन किया जाएगा–

(i) मिथिलाक चित्रकला ओ शिल्पकला – डॉ० उपेन्द्र ठाकुर

(ii) मिथिलाक इतिहास– डॉ० उपेन्द्र ठाकुर

(iii) आधुनिक मिथिलाक इतिहास– डॉ० रत्नेश्वर मिश्र

(iv) विद्यापति कालीन मिथिला– डॉ॰ इन्द्रकान्त झा

(v) मैथिली लोक साहित्य का अध्यय– राम देव झा

(vi) फोकलोर मैजिक एंड लिजेड्स आफ मिथिला–माखन झा

(vii) मिथिला इन द' एज ऑफ विद्यापित– आर0के0 चौधरी

(viii) मैथिली लोकगीतों का अध्ययन– तेजनारायण लाल,

(ix) ओइनवार कालीन मिथिला–डॉ० नारायण कुमार झा

9. शोध परिकल्पना (Hypothesis) :

भारत के (विशेषकर बिहार के) इतिहास के अनेक पक्षों की जानकारियों के लिये मिथिला की लोककला का इतिहास एक महत्त्वपूर्ण और अनुपेक्ष्य आधार है।

निष्कर्ष रूप में, शोध उद्देश्यों के आधार पर 'अध्ययन विषय' के विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करने के लिए बनाई गई पूर्व योजना ही शोध परिकल्पना है।

10. कार्य योजना (Chapterization) :

शोध कार्य को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर अध्ययन किया जाएगाः–

1. प्रस्तावना
2. शोध–कार्य की रूप–रेखा
3. लोक–कला, मिथिला की पहचान
4. मधुबनी 'चित्र–कला' परंपरा से आधुनिकता तक

5. मिथिला की अन्य सांस्कृतिक धरोहर
6. पर्यटन की दृष्टि से मिथिला
7. निष्कर्ष व सुझाव

11. संदर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography) :

1. ठाकुर, उपेन्द्र, मिथिलाक चित्रकला ओ शिल्पकला, पटना, 2006

2. ठाकुर उपेन्द्र, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, दरभंगा, 1988

3. मिश्र, डॉ० रत्नेश्वर, आधुनिक मिथिलाक इतिहास, पटना,

4. झा, रामदेव, मैथिली लोक साहित्य : स्वरूप ओ सौंदर्य, दरभंगा, 2002

5. झा, माखन, फोकलोर मैजिक एंड लिजेड्स आफ मिथिला, पटना, 1972

6. मिश्र, ताराकान्त, मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन, पटना, 1985

7. लाल, तेजनारायण, मैथिली लोकगीतों का अध्ययन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, 1962

8. मिश्र, कृष्णकान्त, मैथिली साहित्यक इतिहास, मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय, प्रथम संस्करण, 1955

9.चौधरी, आर0के0, मिथिला इन द' एज ऑफ विद्यापित, बनारस, 1976

10. सिंह, श्यासनारायण, हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कलकत्ता, 1922

11. वेक्वाड, वेस, द' आर्ट ऑफ मिथिला, लंदन, 1977

12.सिंह, जयधारी, बौद्धगान में तांत्रिक सिद्धान्त, मधुबनी, 1969

13 कालिदास,**मालविकाग्निमित्र,** चौखम्बा संस्कृत सीरीज, बनारस 1951

14. दास, लाल गणपति (सं0) **मिथिला विवाह गीत** (प्रथम भाग), पुस्तक प्रकाशन मंदिर, मधुबनी, 1950

15. झा, लक्ष्मीनाथ, **मिथिला की सांस्कृतिक लोक—चित्रकला**, ग्राम—सरिसव, डाकघर—सरिसवपाही, दरभंगा, 1962

16. वत्स, शिवमूर्ति सिंह, **मिथिला की लोककथाएँ,** (सं0) आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1961

17. झा, परमेश्वर, **मिथिला तत्त्वविमर्श**, विद्यापति प्रेस, लहेरियासराय, प्रथम संस्करण, 1949

18. झा, मुकुन्द बक्शी, **मिथिला भाषामय इतिहास**, विद्याविलास प्रेस, बनारस सिटी, 1940

नोट : शोध की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए, शोध—ग्रन्थ के अध्यायों व योजनाओं में कभी भी परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 के0 कॉलेज, मधुबनी

गवेषिका

पूनम यादव
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

<u>घोषणा–पत्र</u>

मैं उद्घोषणा करती हूँ कि म शोध कार्य हेतु समर्पित रहूँगी तथा शोध कार्य पूरा होने के अधिकतम समय से पूर्व ही अपना शोध–ग्रंथ जमा कर दूँगा।

गवेषिका

पूनम यादव
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

इस बात से सहमत है कि मेरे निर्देशन में समय सीमा के अंदर ही अपना शोध कार्य पूरा करेंगे।

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 के0 कॉलेज,मधुबनी

UNIVERSITY DEPARTMENT OF HISTORY

L.N.Mithila University Kameshwarnagar,
Darbhanga-846004

Letter No. .... Date ....

Sub.: Pre- Ph.D. Registration Course work completion certificate

Crtified that .... PRT/ NET Roll No. .... successfully completed her pre- Ph.D. Registration Course work . She scored .... marks out of 100 full marks .

H.O.D.
Department of History
L.N.M.U.Darbhanga

UNIVERSITY DEPARTMENT OF HISTORY

L.N.Mithila University Kameshwarnagar,
Darbhanga-846004

Letter No. ....   Date ....

Sub.: Pre- Ph.D. Registration Course work completion certificate

Crtified that .... PRT/ NET Roll No. .... successfully completed her pre- Ph.D. Registration Course work . She scored .... marks out of 100 full marks .

H.O.D.
Department of History
L.N.M.U.Darbhanga

डॉ0 विपिन कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
आर0 के0 कॉलेज, मधुबनी

सहमति पत्र

पूनम यादव, एम0 ए0 इतिहास, पीआरटी–2022, क्रमांक 22100303 द्वारा प्रस्तावित शोध विषय ''**मिथिला की लोक–कलाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : मधुबनी चित्र–कला के विशेष संदर्भ में''** पर मैं पर्यवेक्षण की सहमति प्रदान करता हूँ।

पर्यवेक्षक

सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग,
आर0 के0 कॉलेज, मधुबनी